KÁŚMÍRA-KÍRTI.

OR

A SHORT HISTORY OF THE PRESENT ROYAL FAMILY OF JAMBU & KASMIR,

BY

P. DURGÁ PRASÁDA MIŚRA

EDITOR OF THE 'UCHITA-VAKTA'
AND AUTHOR OF SEVERAL
HINDI-WORKS.

CALCUTTA.

Printed and Published by D. P. Misra, at the
'UCHITA-VAKTA' PRESS.
65, CROSS STREET.

1884.

काश्मीर-कीर्त्ति

वा

जम्बु-काश्मीर के वर्त्तमान राजवंश का

संक्षिप्त विवरण।

"उचितवक्ता" के सम्पादक और "विद्यासुकुल" आदि हिन्दी पुस्तकोंके प्रणेता

पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र

लिखित।

कलकत्ता

बड़ाबाजार सूतापट्टी नं ६५

"उचितवक्ता" यन्त्र में डी० पी० मिश्र ने

छापकर प्रकाश किया।

संवत् १९४१

DEDICATION.

श्रीमन्महामहिम
श्री १०८ श्रीप्रतापसिंहजी
दोर्दण्डाखण्डप्रतापेषु

हे स्वकीय-कुलकीर्ति-कमल-दिवाकर !

इस पुस्तक में आपही के पूर्वज अखण्डविक्रम अतुलितकीर्त्ति महामहिम महाराजाधिराजाओं का वर्णन है। अतएव आपही इस (पुस्तक) के यथार्थ अधिकारी हैं; सुतरां आपही के कर-कमलों में समर्पण कर निश्चिन्त होता हूं। लीजिये अब इस कीर्त्ति का संरक्षण आपही के हाथ है; क्यों कि यह आपही की है।

आपहीका सांवा निवासी
राजभक्तिरसलीन
एक दीन

दुर्गा प्रसाद पाधा
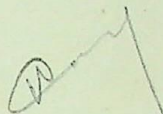
भूमिका ।

संवत् १८ ३७ में मैं अपनी मातृभूमि जम्बु-काश्मीर प्रदेशस्थ सांवा नामक नगर में गयाथा और प्रायः दोवर्षों तक उस देश में रहा ; उसी समय मैं ने इस वंशावली को संग्रह कियाथा। मैं कृतज्ञ चित्त से स्वीकार करता हूं कि, जम्बु-काश्मीर देश प्रवासी राजकर्म्मचारी श्रीयुत बाबू पञ्चानन मुखोपाध्याय महाशय ने सातिशय परिश्रम पूर्वक इस पुस्तकके लिखने में मेरी सम्पूर्ण सहायता की है। यदि किसी सज्जन जन को इस में कोई त्रुटि लक्षित हो तो अनुग्रह पूर्वक मुझे सूचित करें। इस आवृत्ति में जो कुछ भ्रम तथा भूल चूक रह गयी हैं, उने आगामि आवृत्ति में संशोधन करने की इच्छा है। आगे

"हरेरिच्छा बलीयसी"

कलकत्ता
रामनवमी
संवत् १८४१

दुर्गा प्रसाद शर्म्मा।
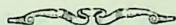
काश्मीर-कीर्त्ति

अति प्राचीन कालमें भी काश्मीर में जम्बू के राजवंशीय राजालोग राज्य कर चुके हैं। इनके प्रथम राजा का नाम दयाकर्ण। दयाकर्ण के धर्म्मकर्ण नामक एक सहोदर थे। इनके पितामह जाम्बलोचनने ही जम्बू राज्य संस्थापन किया। जिस समय दयाकर्ण काश्मीर का राज्य करते थे, उस समय धर्म्मकर्ण जम्बू के राजासन पर उपविष्ट हुए। धर्म्मकर्ण की मृत्यु के बाद इनके पुत्र कीर्त्तिकर्ण और उसके बाद उनके पुत्र अग्निकर्ण जम्बू के राजा हुए। अग्निकर्ण के बाद शक्तिकर्ण जम्बू के राजासन पर उपविष्ट हुए। ये अत्यन्त धार्मिक राजा थे, और इनो ही ने डोगरी अक्षरों की सृष्टि की। इनके बाद शिवप्रकाश राजा हुए। इनके राजत्व काल में पाण्डव बन्धु शीलराज ने पञ्जाबसे कन्धार तक समस्त देश

निज बाहुबल से जय किया। शीलराज ने जम्बू के दक्षिण एक स्थान में एक दुर्ग (किला) बना कर अपने नामानुसार उस जगहका नाम शियालकोट रक्खा। शीलराज जम्बू के राजाके साथ समय समय पर युद्ध कर राजा और प्रजाको अत्यन्त व्यतिव्यस्त कर डालते थे। प्रजागण जम्बू त्यागकर बहुत दिनों तक पहाड़ आदि में जा बसी थी। कलियुगके ४८४ संवत् में ज्योति प्रकाशने चाड़कवंशियोंकी सहायतासे जम्बू के राजा होकर ३५ बर्ष तक राज्य किया। इनके मरनेके बाद इनके ज्येष्ठपुत्र पुष्पकर्ण राजा हुए। इनोने राज्यभार प्राप्त होते ही शियालकोट के राजाके बिरुद्ध अस्त्रधारण पूर्वक उनको पराजय किया। ५० बरस राज्य करके इनके मरने के बाद इनके ज्येष्ठपुत्र रत्नप्रकाशने राजा होकर ४३ बरस राज्य किया। धर्मप्रकाश वा रत्नप्रकाश अपने पुत्र भूषण-प्रकाश पर राज्यभार समर्पण कर हरिद्वार चले गये। भूषण प्रकाशने ६० बर्ष राज्य कर लोकान्तर गमन किया, उसके बाद इनके पुत्र ब्रह्मप्रकाश जम्बू के राजासन पर उपविष्ट हुए। इनके राजत्वकाल में भीषण जलप्लावन से शटलज

और चन्द्रभागा (चिनाव) नदीके मध्यबर्त्ती समस्त प्रदेश एक साथही जलमग्न होगयेथे। ये ४१ बरस राज्य करके परलोक सिधारे, इनके बाद इनकेपुत्र जाम्बप्रकाशने राजा हो कर ५१ बरस राज्य किया। इनके बाद पुत्र पौत्रादि क्रमसे किशोरेन्द्र ४३ बर्ष, अजेन्द्र २५ बरस, राजेन्द्र ५५ बरस, नरेन्द्र १० बरस, विजेन्द्र ३० हरिश्चन्द्र ४० बरस, हिरण्यकमल ३१ बर्ष, कमलबर्ण ४१ बर्ष, धातबर्ण ७० बर्ष, और तेजबर्णने २५ बर्ष, राज्य किया। इनके बाद इनके कनिष्ठभ्राता बलिबर्णने २० बर्ष राज्य किया। इनके बाद इनके पुत्र बोधार्जुन राजा हुए। इनके राजत्व कालमें एकदिन एक (वणिक) सौदागर ने आकर इनको बहुबिध द्रव्य उपढौकन (नजर) प्रदान किया। उन सब द्रव्यों मे सिंहल द्वीपके राजकन्याकी एक प्रतिमूर्त्ति (तस्वीर) भी थी राजाने उसे देखकर और उसके पाणि ग्रहणाभिलाषी हो सिंहल में एक दूत प्रेरण किया। सिंहलराज जव राजाको कन्या देनेमें असम्मत हुए तव बोधार्जुन ससैन्य सिंहलमें गये, और वहां के राजाको संपूर्ण रूपसे परास्त किया और उसकी कन्याको लेकर जम्बू

में प्रत्यावर्त्तन किया । इनके ८० बरस राज्य करके परलोक सिधारने के बाद पुरुषानुक्रमसे कमलनाभ ने ५८ बर्ष, व्रजनाभने ५० बर्ष, शिवनाभने ७५ बर्ष कनिजनाभ ३२ बर्ष, कमलबल्लभ (कनिष्ठ सहोदर) ५३ बर्ष, स्वरूपबल्लभने ४० बर्ष, होमबल्लभ ७० बर्ष, और राजबल्लभने २५ बर्ष, राज्य किया। ये कटोचराज मङ्गलचन्द्रके साथ युद्धमें जसरोटा नामक स्थान में निःसन्तान निहत हुए। इनके पितृव्यपुत्र भानुदत्तने राजा हो ६८ बर्ष राजत्र किया तदन्तर इनके पुत्र समुद्रयत्त राजा हुए। ५० बरस राजत्र करके इनके मानवलीला संवरण करनेके बाद इनके पुत्र हरितदत्तने राजाहो कर ३० बर्ष राजत्र किया। इनके सन्तानोंमें से कोई राजासन पर वैठनेके योग्य न होनेके कारण भानुदत्तके अन्य पुत्रके वंशोद्भव सिंहहरण राजा हुए। ५० बरस राजत्र करके ये परलोक गये। इनके बाद पुरुषानुक्रमसे मृगहरण २६ वर्ष दूसरा पुत्र धर्मवर्मा ७५ जयकार २५ बर्ष, देवकार ६० बर्ष, आदि बराह ५१ बर्ष भूमिदत्त ७० बर्ष, भयदत्त वा भूदत्त ७५ बर्ष, कूर्मदत्त वा पूर्णदत्त ६४ बर्ष क्षेमदत्त वा सोमदत्त

८० बर्ष, जयदत्त ३० बर्ष, बिजयदत्त २५ बर्ष, दामोदर चन्द्र (पितृव्यपुत्र) ३७ बर्ष, उदयचन्द्र ४० बर्ष, लक्ष्मणचन्द्र ५३ बर्ष, समुद्र भूषण ५१ बर्ष जगत सिंह २० बर्ष, भकतसिंह (शक्तिभूषण) ४२ बर्ष, गज सिंह ३५ बर्ष, अजयसिंह ४० वर्ष, विजयसिंह ४८ वर्ष, देवगुप्त ५२ बरस, रामगुप्त ७५ बरस, चन्द्रगुप्त ६० बरस, नन्दगुप्त ६३ बर्ष, आदिराज ४९ बर्ष, देवराज ५२ बरस, गन्धर्वराज ४२ बरस कदम्बराज वा कर्मवर्मा ४६ बर्ष, कर्मराज ७४ बर्ष, चीरराज २५ बर्ष, खिखिरराज ३२ बर्ष, सिन्धुराज ५० बर्ष, जगतराज २० बर्ष, दोदराज ३० बर्ष, योगराज ५७ बर्ष, सूर्य्यहंस ६३ बर्ष, गङ्गाधर ४६ बर्ष, देवलाधर ४९ बर्ष, चपलाधर ५०बर्ष, कीर्त्तिधर ६० बरस, अजयधर ४९ बरस, विजयधर ५० बरस, वज्जलाधरने ५३ बरस राजत्र किया।

बज्जलाधर की मृत्युके वाद इनके पुत्र सूर्य्य देवने राजा होकर ७२बर्ष राज्य किया। इनोने अति सुप्रणाली से राजत्व किया। इनोने भिन्न भिन्न विभागों में स्वतन्त्र स्वतन्त्र दिवान नियुक्त किये थे; वे लोग

प्रत्येक भिन्न भिन्न दिनोंमें अपने अपने बिभागों का कार्य्य बिबरण राजाको सुनातेथे। सूर्य्यदेव के बाद पुरुषानुक्रमसे भोजदेव ६५ बर्ष, अवतार देव ४४ बर्ष; यशदेव ३२ बर्ष, संग्राम देव ४१ बर्ष, यशङ्करदेव बा चक्रदेव (११५१ संवत में राजा हुए) ७० बर्ष बृजदेव ५१ बर्ष, नृसिंह देव ४२ बर्ष, अर्जुनदेब ५५ बर्ष, योध-देव ४७ बर्ष और मानदेवने ४० बर्ष राज्य किया। १४५६ संवत में इनके परलोक जानेके बाद पुत्रादि क्रमसे जमीर देव २६ बर्ष, अजयदेव ३१ बर्ष, बीरदेव ४५ बर्ष, खखरदेव २८ बर्ष, कपूरदेव ४१ वर्ष, समी-लदेव २५ वर्ष, संग्राम देव ३० बर्ष, भूपदेध २६ वर्ष, हरदेव २६ बर्ष, गजयसिंह १५ बर्ष और ध्रुवदेव ने (१७६० संवतमें राजासन पर बैठे) २२ बर्ष राजत्र किया। ध्रुवदेवके चार पुत्र थे; रणजीतदेव, मियां च-णार देव, मियां बलवन्त सिंह और मियां सूरत सिंह। रणजीत देव ५७ वर्ष राजत्र करके १८३८ संवतमें काल-ग्रासमें पतित हुए। इनके राजत्वकाल में अफगान राज अहम्मद शाह दुर्रानीके अधीनस्थ काश्मीरके

शासन कर्त्ता सुखजीवन ने उनके विरुद्ध में विद्रोह उत्थापन किया। अहमद शाह दुर्रानीने जम्बूराज रणजीत देवसे मदद मांगी। उधर अहमद शाह की सेनाएं पुञ्छके रस्तेसे काश्मीर पहुंचीं। अहमद शाहके साथ युद्धमें सुखजीवन संपूर्ण रूपसे पराजित हुए।

अहमद शाह रणजीत देवसे इस युद्ध में वहुत सहायता प्राप्त होनेके कारण रणजीत देव को पुरुषानुक्रमसे साठ हजार खड़बार (दोमन सोलह सेरका होता है) शालि (धान्य) प्रतिबर्ष प्रदान करनेमें प्रतिश्रुत हुए। रणजीतदेव को उस धान्यसे वार्षिक एक लाख पचीस हजार रुपये की आमदनी थी। १८३९ संवतके ८ वैशाखके दिन व्रजराज देवने जम्बू राजासन पर उपवेशन किया। इनोंने पांच बर्ष कालमात्र राजत्र करके परलोक गमन किया। इसके बाद इनके एक बर्ष वयस्क पुत्र संग्रामदेव राजा होकर एकादश वर्ष वयःक्रम कालमें मृत्युमुखमें पतित हुए। व्रिजराजदेव के वैमात्रेय भ्राताके पुत्र जेतसिंह जम्बू के राजा हुए। जेतसिंह पर प्रजा अत्यन्त विरक्त थी। इस समय

सुप्रसिद्ध महाराजा रणजीत सिंहके अधीनमें भाई हुकूमा सिंह जम्बू राजतके निकटवर्त्ती स्थान समूहों के शासन-कर्त्ता थे। राजा जेतसिंह पर प्रजागण सन्तुष्ट नहीं है, यह जानकर हुकूमासिंहने उनके विरुद्ध अस्त्र धारण किया। मियां सूरतसिंहके प्रपौत्र जोरावरसिंह के पौत्र किशोर सिंह के पुत्र और वर्तमान महाराज रणवीर सिंह के स्वर्गीय पिता मियां गुलाव सिंहने युद्धक्षेत्र में उपस्थित होकर अपरिमित साहस, क्षमता और दक्षताके साथ हुकूमा सिंह को राजतसे भगा दिया। महाराज रणजीत सिंहने हुकूमा सिंह की पराजय और गुलाव सिंहकी जय-लाभ का समाचार सुनते ही गुलाव सिंह को बुलाकर अपने सैनिक कार्य्य में नियुक्त किया। गुलाव सिंहके और दोनो भाई मियां ध्यान सिंह और मियां सूचेत सिंह ने भी महाराजा रणजीत सिंहकी सहयोगिता स्वीकार की। गुलाव सिंहके बाहुबलसे ही महाराजा रणजीत सिंह ने काश्मीर राज वजीर फते खां को संपूर्ण रूपसे परास्त करके अटक दुर्ग अधिकार किया। गुलाव सिंह और उनके दोनो भाईयोंके कार्य्य परम्परा और प्रभुभक्ति

दर्शन से सन्तुष्ट होकर महाराज रणजीत सिंह ने गुलाब सिंह को जम्बू, ध्यानसिंहको जसरोटा और पुंछ और सुचेत सिंह को सांवा और रामनगर नामक स्थान समूह प्रदान किये। १८७९ संवत में राजा गुलाव सिंहने जम्बू में आके राजत्र करना आरम्भ किया १८९० संवतमें राजा गुलाव सिंहने कष्टवाड़ के रस्ते से अग्रसर होकर लदाख स्कर्दू प्रभृति स्थान जय किये। १८९९ संबत में लासाके शासन कर्त्ताके साथ राजा गुलावसिंह की सन्धि हुई। सन १८४३ ई० में राजा सुचेत सिंह के नि:सन्तान परलोक गमन करनेके बाद उनके राजत्र स्थान सव भी राजा गुलाव सिंहके राजत्र भुक्त हुए। राजा ध्यान सिंहके पुत्र जवाहर सिंह उस समय पुञ्छका राजत्र करते थे। १८४४ और ४६ ईसवी में सिक्खोंके साथ अंग्रेजों का युद्ध हुआ। राजा गुलाव सिंह ने सिक्खों की कुछ भी मदत न करके बरन अंग्रजों की ही यथेष्ट सहायता की। अंग्रेज लोगोंने राजा गुलाव सिंह का ऐसा बरताब देख सन्तुष्ट हो उनको महाराजा उपाधि दी, और पछत्तर लाख रुपये लेकर

काश्मीर राज्य का पूरा स्वाधीन सत्व महाराज गुलाव सिंह को दिया काश्मीर के सिक्खराज प्रतिनिधि सेख इमामुद्दीन पहिले राज्यका दखल देनेमें असम्मत हुए थे, फिर आपही छोड़कर चल दिये। महाराज गुलाव सिंहने काश्मीर जाके निर्विवादसे राजासन पर उपवेशन किया। सन १८५७ ई० में गदर के समय महाराज गुलाव सिंह के वैकुण्ठ बास होनेके बाद, उनके सुयोग्य धर्मपरायण प्रजा सुशासक पुत्र महाराज रणवीर सिंह जम्बू और काश्मीर के राजासन पर वैठ सुचारु रूपसे राज्य शासन करते आते हैं।

इनके युवराज श्रीप्रताप सिंह जी तथा कुमार श्रीराम सिंह जी और कुमार श्रीअमर सिंह जी भी बड़ी योग्यता से राज्य के सुप्रवन्ध तथा प्रजा को प्रसन्न रक्खने के निमित्त कायमनो वाक्य से प्रवृत्त रहते हैं। देशी रज-वाड़ो में काश्मीर सदृश किसी राज्य की भी प्रजा सुशा-सित और सुप्रसन्न नहीं है।